Phone: 0141-2711070 Ext.2305
0141-2706470 Office

राजनीति विज्ञान विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर–302004
DEPARTMENT OF POLITICAL SCIENCE, UNIVERSITY OF RAJASTHAN, JAIPUR-302004

NO.DPS/ULP/2018/ Dated: 24.02.2018

राजनीति विज्ञान विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय के विश्वविद्यालय नेतृत्व कार्यक्रम के अर्न्तगत दिनांक 5 एवं 6 मार्च 2018 को **"भारतीय लोकतंत्र : वर्तमान परिदृश्य एवं संभावनाएं"** विषय पर आयोजित की जा रही राष्ट्रीय संगोष्ठी में आपाको आमंत्रित करते हुए हमें हार्दिक प्रसन्नता हो रही है।

सेमीनार का विषय अत्यन्त सरल एवं सामान्य होने के साथ–साथ बहुत प्रचलित भी है इस विषय पर समय–समय पर वार्ताएँ, लेख एवं संगोष्ठीयाँ आयोजित होती रही हैं। हमने पुनः इसी विषय का चयन किया क्योंकि ये मुद्दा अत्यन्त महत्वपूर्ण है एवं इस पर गंभीर चर्चा अपेक्षित है।

संविधान निर्माताओं द्वारा पूर्ण शुचिता एवं ईमानदारी के साथ विश्व के सबसे बड़े संविधान के माध्यम से स्थापित भारतीय लोकतंत्र ने विगत सात दशकों से अधिक समय की विकास यात्रा के दौरान विश्व के समक्ष संसदीय लोकतंत्र का एक अद्वितीय आदर्श प्रस्तुत किया है। हम गर्व के साथ कह सकते हैं कि भारत उन चंद विकासशील देशों में शामिल है जहाँ वास्तव में कार्यात्मक लोकतंत्रात्मक व्यवस्था है। जटिल सामाजिक आर्थिक ढांचे और उल्लेखनीय विभिन्नताओं के बाद भी भारत एक सफल लोकतंत्र है।

भारत लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था की सभी पूर्वावश्यकताओं को पूरा करता है और लोकतांत्रिक संस्थाएँ यहाँ दृढता के साथ प्रतिस्थापित हैं। प्रत्येक नागरिक को संविधान प्रदत्त राजनीतिक, आर्थिक तथा सामाजिक न्याय उपलब्ध है; स्वतंत्र, निष्पक्ष, समयबद्ध, वयस्क मताधिकार पर आधारित चुनावों के माध्यम से सरकारों का शांतिपूर्ण परिवर्तन संभव है; सेना राजनीति से बाहर है; न्यायपालिका स्वतंत्र एवं निष्पक्ष है; नागरिक स्वतंत्रता, समानता के साथ पंथनिरपेक्ष व्यवस्था है; जीवंत, सक्रिय और जागरूक मीडिया एवं जनमत की महत्ता सभी इस बात का प्रमाण हैं कि भारत में प्रक्रियात्मक और राजनीतिक अर्थ मे लोकतंत्र कायम है।

भारतीय लोकतंत्र के वर्तमान परिदृश्य और कार्यात्मक पक्ष पर गहन विचार करने पर प्रश्न उठता है कि संविधान के द्वारा राजनीतिक लोकतंत्र की स्थापना तो हो गई परन्तु क्या बिना सामाजिक और आर्थिक लोकतंत्र के राजनीतिक लोकतंत्र की स्थापना संभव है ? आज भारतीय लोकतंत्र गंभीर संकट के दौर से गुजर रहा है और उसका धीरे–धीरे क्षरण हो रहा है।

भारतीय लोकतंत्र सिद्धान्ततः कई प्रतीकों पर खड़ा है परन्तु प्रतीकों की शुचिता और परिवक्ता पर प्रश्न खड़े हो रहे हैं और आंशका होती है कि बदलते समय के साथ भारतीय प्रजातंत्र परिवक्व हो रहा है या कमजोर?

जातिवाद, क्षेत्रवाद, नक्सलवाद, सम्प्रदायवाद एवं भ्रष्टचार जैसे क्रियात्मक दोष लोकतंत्र की जड़ें कमजारे कर रहे हैं। स्वतंत्रता के बाद से भारतीय लोकतंत्र की यात्रा उतार–चढ़ाव युक्त रही है। अनेकों मील के पत्थर स्थापित करने के बाद भी विभिन्न चुनौतियों के साथ भारतीय लोकतंत्र अपने समय की सबसे कठिन परिस्थतियों से गुजर रहा है। जनता एवं नेतृत्व दोनों का चारित्रिक पतन हो रहा है और सरकार के अगों के प्रति जन विश्वास में कमी आ रही है।

विश्व के सर्वाधिक युवा, ऊर्जावान एवं कौशलयुक्त मानव संसाधन, सर्वाधिक श्रेष्ठ भौगोलिक परिस्थतियों और अपार प्राकृतिक संपदा होने के पश्चात् भी हम विकास के शीर्ष पर पहुचने में असफल रहे हैं ऐसा लगता है कि हमने लोकतंत्र को अगींकृत किया है परन्तु उसे दक्षता से क्रियान्वित नहीं कर पाए हैं। धीरे–धीरे "तंत्र" महत्वपूर्ण हो रहा है एवं "लोक" कमजोर हो रहा है।

इस विषय पर अति गंभीरता से चर्चा आवश्यक है। यदि हम लोकतंत्र के समक्ष एक भी चुनौती को गंभीर व निरपेक्ष रूप से समझ सकें एवं समाधान सुझा सकें तो यह भारतीय लोकतंत्र के लिए महत्वपूर्ण योगदान होगा। हमें आलोचनात्मक तरीके से भारतीय लोकतंत्र को परखना चाहिए, संभवतः यही भावना उक्त राष्ट्रीय संगोष्ठी का हेतु है।

प्रस्तावित संगोष्ठी इस सन्दर्भ में सार्थक बहस तथा विचार विमर्श की आवश्यकता पूर्ति कि दिशा में एक प्रयास है। संगोष्ठी में निम्न मुद्दों एवं अन्य संबंधित पक्षों पर विचार–मन्थन संयोजित किया जाना प्रस्तावित है :

1. भारतीय लोकतंत्र का स्वरूप।
2. भारतीय लोकतंत्र एवं समाज।
3. भारतीय लोकतंत्र एवं न्यायपालिका।
4. भारतीय लोकतंत्रः राजनीतिक दल एवं दवाब समूह।
5. भारत का निर्वाचन तंत्र एवं निर्वाचन प्रक्रिया।
6. भारतीय लोकतंत्र एवं नौकरशाही।
7. लोकतंत्र एवं मीडिया।
8. आर्थिक लोकतंत्र।
9. उपरोक्त आयामों से सम्बंधित चुनौतियाँ।
10. उपरोक्त आयामों के माध्यम से संभावनाओं की खोज।

उपर्युक्त इंगित बिन्दु केवल संकेत हैं। आप अपने प्रस्तुतिकरण के लिए अध्ययन क्षेत्र के अनुरूप मुख्य विषय की परिधि में किसी भी उपयुक्त विषय का चयन करने हेतु स्वतंत्र हैं।

हम आपसे आग्रह करते हैं कि कृपया अपने शोध पत्र का सार संक्षेप दिनांक 3 मार्च तक अग्रांकित ई–मेल पते पर अवश्य भेजने का कष्ट करें।

headpolscienceuor@gmail.com

रजिस्ट्रेशन फीस का विवरणः–

1. शिक्षक एवं रिसर्च फैलो	1000/–
2. शोध छात्र	600/–
3. विद्यार्थी	200/–

रजिस्ट्रेशन फीस का भुगतान ऑनलाइन/चैक द्वारा भी 'डायरेक्टर यू.एल.पी. राजनीति विज्ञान विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय' के नाम से किया जा सकता है।
Account No.: 90360100000479
Bank Branch: UCO Bank University Campus
IFSC Code: UCBA0002027
MICR Code: 302028019
आपसे आग्रह है कि संगोष्ठी में भाग लें एवं अपना अकादमिक योगदान दें। वित्तीय सीमा के कारण टी.ए. और डी.ए. का भुगतान संभव नहीं होगा।

प्रो. निधि लेखा शर्मा
(विभागाध्यक्ष एवं डायरेक्टर यू.एल.पी)
मो. 9772111000

डॉ. मन्जु कुमारी जैन
(संयोजक संगोष्ठी)
मो. 9414335981

डॉ. श्याम मोहन अग्रवाल
(सह–संयोजक संगोष्ठी)
मो. 9214179709